विकिपीडिया
एक मुक्त ज्ञानकोश

शिवाजी

इस **जीवनी लेख में सत्यापन हेतु अतिरिक्त सन्दर्भों की आवश्यकता है**। कृपया विश्वसनीय स्रोत जोड़कर इस लेख को बेहतर बनाने में सहयोग करें (https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%80&action=edit)।
जीवित व्यक्तियों के बारे में विवादास्पद सामग्री जो स्रोतहीन है या जिसका स्रोत विवादित है **तत्काल हटाई जानी चाहिये**, विशेषकर यदि वह मानहानिकारक अथवा हानिकारक हो।
(फ़रवरी 2021)

इस लेख का संपादन नए या अस्वीकृत सदस्यों द्वारा निषेध है.
अन्य जानकारी के लिए सुरक्षा नियम और protection log (https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%3ALog&page=%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%80&type=protect) देखें। यदि आप इस लेख का संपादन नहीं कर सकते हैं और करना चाहते हैं, आप submit an edit request (https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%BE%3A%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%80&preload=Template%3ASubmit+an+edit+request%2Fpreload&action=edit&section=new&editintro=Template%3AEdit+semi-protected%2Feditintro&preloadtitle=Semi-protected+edit+request+on+19+%E0%A4%AB%E0%A4%BC%E0%A4%B0%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%80+2026&preloadparams%5B%5D=edit+semi-protected&preloadparams%5B%5D=%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%80), talk page पर चर्चा, असुरक्षा का अनुरोध, लॉग इन, या खाता बना सकते हैं।

छत्रपति शिवाजीराजे भोसले (१६३० -१६८० ई.) भारत के एक महान राजा एवं रणनीतिकार थे जिन्होंने १६७४ ई. में पश्चिम भारत में हिन्दवी स्वराज या मराठा साम्राज्य की नींव रखी।[1] इसके लिए उन्होंने मुगल साम्राज्य के शासक औरंगज़ेब से संघर्ष किया। सन् १६७४ में रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक हुआ और वह "छत्रपति" बने।

छत्रपती शिवाजी महाराज ने अपनी अनुशासित सेना एवं सुसंगठित प्रशासनिक इकाइयों कि सहायता से एक योग्य एवं प्रगतिशील प्रशासन प्रदान किया। उन्होंने समर-विद्या में अनेक नवाचार किए तथा छापामार युध गोरिल्ला युद्धनीति Guerilla Warfare) की नई शैली (शिवसूत्र) विकसित की। गोरिल्ला युद्धनीति/छापामार युद्धनीति के जनक मराठा हि थे। उन्होंने प्राचीन हिन्दू राजनीतिक प्रथाओं तथा दरबारी शिष्टाचारों को पुनर्जीवित किया और मराठी एवं संस्कृत को राजकाज की भाषा बनाया। वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम में नायक के रूप में स्मरण किए जाने लगे। बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिए शिवाजीराजे जन्मोत्सव की शुरुआत की

शिवाजीराजे भोसले

शककर्ता
हिंदूधर्मोद्धारक
मराठा साम्राज्य के छत्रपति

मालोजीराजे भोसले (१५५२-१५९७) अहमदनगर सल्तनत के एक प्रभावशाली जनरल थे, पुणे चाकण और इंदापुर के देशमुख थे। मालोजीराजे के बेटे शहाजीराजे भी बीजापुर सुल्तान के दरबार में बहुत प्रभावशाली राजनेता थे। शहाजी राजे अपने पत्नी जिजाबाई से शिवाजी का जन्म हुआ।

आरम्भिक जीवन

शिवाजी का जन्म १९ फरवरी, १६३० को शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। [2][3]उनके पिता शाहजीराजे भोंसले एक शक्तिशाली सामंत राजा एवं कूर्मि कुल में जन्मे थे। उनकी माता जिजाबाई जाधवराव कुल में उत्पन्न असाधारण प्रतिभाशाली महिला थी। शिवाजी के बड़े भाई का नाम सम्भाजीराजे था जो अधिकतर समय अपने पिता शहाजीराजे भोसले के साथ ही रहते थे। शहाजीराजे कि दूसरी पत्नी तुकाबाई मोहिते थीं। उनसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम व्यंकोजीराजे था। शिवाजी महाराज के चरित्र पर माता-पिता का बहुत प्रभाव पड़ा। उनका बचपन उनकी माता के मार्गदर्शन में बीता। उन्होंने राजनीति एवं युद्ध की शिक्षा ली थी। वे उस युग के वातावरण और घटनाओं को भली प्रकार समझने लगे थे। उनके हृदय में स्वाधीनता की लौ प्रज्ज्वलित हो गयी थी। उन्होंने कुछ स्वामिभक्त साथियों का संगठन किया। शिवाजी की माता जीजाबाई बड़ी ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी| उनका इनके जीवन पर अत्यधिक अच्छा प्रभाव पड़ा|

वैवाहिक जीवन

शिवाजी का विवाह सन् १४ मई १६४० में सइबाई निंबाळकर (सई भोसले) के साथ लाल महल, पुणे में हुआ था। सई भोसले शिवाजी की पहली और प्रमुख पत्नी थीं। वह अपने पति के उत्तराधिकारी सम्भाजी की मां थीं। शिवाजी ने कुल ८ विवाह किए थे। वैवाहिक राजनीति के जरिए उन्होंने सभी मराठा सरदारों को एक छत्र के नीचे लाने में सफलता प्राप्त की।

शिवाजी की पत्नियाँ:

1. सईबाई निंबालकर – (सम्भाजी, रानूबाई, सखूबाई, अंबिकाबाई)
2. सोयराबाई मोहिते– (राजाराम, दीपाबाई)
3. सकवरबाई गायकवाड – (कमलाबाई)
4. सगुणाबाई शिर्के – (राजकुवरबाई)
5. पुतलाबाई पालकर
6. काशीबाई जाधव
7. लक्ष्मीबाई विचारे
8. गुंवांताबाई इंगले

ब्रिटिश संग्रहालय में स्थित शिवाजी का असली चित्र

शासनावधि	६ जून १६७४ – ३ अप्रैल १६८०
राज्याभिषेक	६ जून १६७४
पूर्ववर्ती	शाहजीराजे
उत्तरवर्ती	सम्भाजीराजे
जन्म	१९ फ़रवरी १६३० फाल्गुन शुक्ल तृतीया, शक संवत्सर १५५१ शिवनेरी दुर्ग
निधन	३ अप्रैल १६८० रायगढ़
समाधि	रायगढ़
जीवनसंगी	सईबाई, सोयराबाई, पुतळाबाई,गुणवंताबाई, सगुणाबाई, सकवारबाई, लक्ष्मीबाई, काशीबाई
संतान	सम्भाजी, राजाराम, राणुबाई आदि.
घराना	भोंसले
पिता	शहाजीराजे
माता	जीजाबाई

सैनिक वर्चस्व का आरम्भ

शिवाजीराजे और माता जिजाबाई

उस समय बीजापुर का राज्य आपसी संघर्ष तथा विदेशी आक्रमण काल के दौर से गुजर रहा था। ऐसे साम्राज्य के सुल्तान की सेवा करने के बदले उन्होंने मावलों को बीजापुर के खिलाफ़ संगठित करने लगे। मावल प्रदेश पश्चिम घाट से जुड़ा है और कोई १५० किलोमीटर लम्बा और ३० किलोमीटर चौड़ा है। वे संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण कुशल योद्धा माने जाते हैं। इस प्रदेश में मराठा और सभी जाति के लोग रहते हैं। शिवाजी महाराज इन सभी जाति के लोगों को लेकर मावलों (मावळा) नाम देकर सभी को संगठित किया और उनसे सम्पर्क कर उनके प्रदेश से परिचित हो गए थे। मावल युवकों को लाकर उन्होंने दुर्ग निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया था। मावलों का सहयोग शिवाजी महाराज के लिए बाद में उतना ही महत्वपूर्ण साबित हुआ जितना शेरशाह सूरी के लिए अफ़गानों का साथ।

उस समय बीजापुर आपसी संघर्ष तथा मुगलों के आक्रमण से परेशान था। बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह ने बहुत से दुर्गों से अपनी सेना हटाकर उन्हें स्थानीय शासकों या सामंतो के हाथ सौंप दिया था। जब आदिलशाह बीमार पड़ा तो बीजापुर में अराजकता फैल गई और शिवाजी महाराज ने अवसर का लाभ उठाकर बीजापुर में प्रवेश का निर्णय लिया। शिवाजी महाराज ने इसके बाद के दिनों में बीजापुर के दुर्गों पर अधिकार करने की नीति अपनाई। सबसे पहला दुर्ग था रोहिदेश्वर का दुर्ग।

दुर्गों पर नियंत्रण

रोहिदेश्वर का दुर्ग सबसे पहला दुर्ग था जिसके शिवाजी महाराज ने सबसे पहले अधिकार किया था। उसके बाद तोरणा का दुर्ग जो पुणे के दक्षिण पश्चिम में ३० किलोमीटर की दूरी पर था। शिवाजी ने सुल्तान आदिलशाह के पास अपना दूत भेजकर खबर भिजवाई की वे पहले किलेदार की तुलना में बेहतर रकम देने को तैयार हैं और यह क्षेत्र उन्हें सौंप दिया जाए। उन्होंने आदिलशाह के दरबारियों को पहले ही रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर लिया था और अपने दरबारियों की सलाह के मुताबिक आदिलशाह ने शिवाजी महाराज को उस दुर्ग का अधिपति बना दिया। उस दुर्ग में मिली सम्पत्ति से शिवाजी महाराज ने दुर्ग की सुरक्षात्मक कमियों की मरम्मत का काम करवाया। इससे कोई १० किलोमीटर दूर राजगढ़ का दुर्ग था और शिवाजी महाराज ने इस दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया।शिवाजी महाराज की इस साम्राज्य विस्तार की नीति की भनक जब आदिलशाह को मिली तो वह क्षुब्ध हुआ। उसने शाहजी राजे को अपने पुत्र को नियन्त्रण में रखने को कहा। शिवाजी महाराज ने अपने पिता की परवाह किए बिना अपने पिता के क्षेत्र का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया और नियमित लगान बन्द कर दिया। राजगढ़ के बाद उन्होंने चाकन के दुर्ग पर अधिकार कर लिया और उसके बाद कोंडना के दुर्ग पर अधिकार किया। परेशान होकर सबसे काबिल मिर्जाराजा जयसिंह को भेजकर शिवाजी के २३ किलों पर कब्जा किया। उसने पुरंदर के किले को नष्ट कर दिया। शिवाजी को इस संधि कि शर्तो को मानते हुए अपने पुत्र संभाजी को मिर्जाराजा जयसिंह को सौपना पड़ा। बाद में शिवाजी महाराज के मावला तानाजी मालुसरे ने कोंढाणा दुर्ग पर कब्जा किया पर उस युद्ध में वह वीरगति को प्राप्त हुआ उसकी याद में कोंडना पर अधिकार करने के बाद उसका नाम सिंहगढ़ रखा गया।

शाहजी राजे को पुणे और सूपा की जागीरदारी दी गई थी और सूपा का दुर्ग उनके सम्बंधी बाजी मोहिते के हाथ में थी। शिवाजी महाराज ने रात के समय सूपा के दुर्ग पर आक्रमण करके दुर्ग पर अधिकार कर लिया और बाजी मोहिते को शाहजी राजे के पास कर्नाटक भेज दिया। उसकी सेना का कुछ भाग भी शिवाजी महाराज की सेवा में आ गया। इसी समय पुरन्दर के किलेदार की मृत्यु हो गई और किले के उत्तराधिकार के लिए उसके तीनों बेटों में लड़ाई छिड़ गई। दो भाइयों के निमंत्रण पर शिवाजी महाराज पुरन्दर पहुंचे और कूटनीति का सहारा लेते हुए उन्होंने सभी भाइयों को बन्दी बना लिया। इस तरह पुरन्दर के किले पर भी उनका अधिकार स्थापित हो गया। १६४७ ईस्वी तक वे चाकन से लेकर नीरा तक के भूभाग के भी अधिपति बन चुके थे। अपनी बढ़ी सैनिक शक्ति के साथ शिवाजी महाराज ने मैदानी इलाकों में प्रवेश करने की योजना बनाई।

एक अश्वारोही सेना का गठन कर शिवाजी महाराज ने आबाजी सोन्देर के नेतृत्व में कोंकण के विरुद्ध एक सेना भेजी। आबाजी ने कोंकण सहित नौ अन्य दुर्गों पर अधिकार कर लिया। इसके अलावा ताला, मोस्माला और रायटी के दुर्ग भी शिवाजी महाराज के अधीन आ गए थे। लूट की सारी सम्पत्ति रायगढ़ में सुरक्षित रखी गई। कल्याण के गवर्नर को मुक्त कर शिवाजी महाराज ने कोलाबा की ओर रुख किया और यहां के प्रमुखों को विदेशियों के खिलाफ़ युद्ध के लिए उकसाया।

शाहजी की बन्दी और युद्धविराम

बीजापुर का सुल्तान शिवाजी महाराज की हरकतों से पहले ही आक्रोश में था। उसने शिवाजी महाराज के पिता को बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। शाहजी राजे उस समय कर्नाटक में थे और एक विश्वासघाती सहायक बाजी घोरपड़े द्वारा बन्दी बनाकर बीजापुर लाए गए। उन पर यह भी आरोप लगाया गया कि उन्होंने कुतुबशाह की सेवा प्राप्त करने की कोशिश की थी जो गोलकुंडा का शासक था और इस कारण आदिलशाह का शत्रु। बीजापुर के दो सरदारों की मध्यस्थता के बाद शाहाजी महाराज को इस शर्त पर मुक्त किया गया कि वे शिवाजी महाराज पर लगाम कसेंगे। अगले चार वर्षों तक शिवाजी महाराज ने बीजीपुर के खिलाफ़ कोई आक्रमण नहीं किया। इस दौरान उन्होंने अपनी सेना संगठित की।

प्रभुता का विस्तार

शाहजी की मुक्ति की शर्तों के मुताबिक शिवाजीराजे ने बीजापुर के क्षेत्रों पर आक्रमण तो नहीं किया पर उन्होंने दक्षिण-पश्चिम में अपनी शक्ति बढ़ाने की चेष्टा की। पर इस क्रम में जावली का राज्य बाधा का काम कर रहा था। यह राज्य सातारा के सुदूर उत्तर पश्चिम में वामा और कृष्णा नदी के बीच में स्थित था। यहाँ का राजा चन्द्रराव मोरे था जिसने ये जागीर शिवाजी से प्राप्त की थी। शिवाजी ने मोरे शासक चन्द्रराव को स्वराज में शमिल होने को कहा पर चन्द्रराव बीजापुर के सुल्तान के साथ मिल गया। सन् १६५६ में शिवाजी ने अपनी सेना लेकर जावली पर आक्रमण कर दिया। चन्द्रराव मोरे और उसके दोनों पुत्रों ने शिवाजी के साथ लड़ाई की पर अन्त में वे बन्दी बना लिए गए पर चन्द्रराव भाग गया। स्थानीय लोगों ने शिवाजी के इस कृत्य का विरोध किया पर वे विद्रोह को कुचलने में सफल रहे। इससे शिवाजी को उस दुर्ग में संग्रहित आठ वंशों की सम्पत्ति मिल गई। इसके अलावा कई मावल सैनिक मुरारबाजी देशपांडे भी शिवाजी की सेना में सम्मिलित हो गए।

बिरला मंदिर, दिल्ली में शिवाजी महाराज की मूर्ति

मुगलों से पहली मुठभेड़

शिवाजी के बीजापुर तथा मुगल दोनों शत्रु थे। उस समय शहजादा औरंगजेब दक्कन का सूबेदार था। इसी समय १ नवम्बर १६५६ को बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह की मृत्यु हो गई जिसके बाद बीजापुर में अराजकता का माहौल पैदा हो गया। इस स्थिति का लाभ उठाकर औरंगज़ेब ने बीजापुर पर आक्रमण कर दिया और शिवाजी ने औरंगजेब का साथ देने की बजाय उसपर धावा बोल दिया। उनकी सेना ने जुन्नार नगर पर आक्रमण कर ढेर सारी सम्पत्ति के साथ २०० घोड़े लूट लिए। अहमदनगर से ७०० घोड़े, चार हाथी के अलावा उन्होंने गुण्डा तथा रेसिन के दुर्ग पर भी लूटपाट मचाई। इसके परिणामस्वरूप औरंगजेब शिवाजी से खफा हो गया और मैत्री वार्ता समाप्त हो गई। शाहजहां के आदेश पर औरंगजेब ने बीजापुर के साथ सन्धि कर ली और इसी समय शाहजहां बीमार पड़ गया। उसके व्याधिग्रस्त होते ही औरंगज़ेब उत्तर भारत चला गया और वहां शाहजहां को कैद करने के बाद मुगल साम्राज्य का शाह बन गया।

कोंकण पर अधिकार

दक्षिण भारत में औरंगजेब की अनुपस्थिति और बीजापुर की डावाडोल राजनीतिक स्थित को जानकर शिवाजी ने समरजी को जंजीरा पर आक्रमण करने को कहा। परंतु जंजीरा के सिद्दियों के साथ उनकी लड़ाई कई दिनों तक चली। इसके बाद शिवाजी ने खुद जंजीरा पर आक्रमण किया और दक्षिण कोंकण पर अधिकार कर लिया और दमन के पुर्तगालियों से वार्षिक कर एकत्र किया। कल्याण तथा भिवण्डी पर अधिकार करने के बाद वहां नौसैनिक अड्डा बना लिया। इस समय तक शिवाजी ४० दुर्गों के मालिक बन चुके थे।

बीजापुर से संघर्ष

इधर औरंगजेब के आगरा (उत्तर की ओर) लौट जाने के बाद बीजापुर के सुल्तान ने भी राहत की सांस ली। अब शिवाजी ही बीजापुर के सबसे प्रबल शत्रु रह गए थे। शाहजी को पहले ही अपने पुत्र को नियन्त्रण में रखने को कहा गया था पर शाहजी ने इसमें अपनी असमर्थता जाहिर की। शिवाजी से निपटने के लिए बीजापुर के सुल्तान ने अब्दुल्लाह भटारी (अफ़ज़ल खां) को शिवाजी के विरूद्ध भेजा। अफ़जल ने १२०००० सैनिकों के साथ १६५९ में कूच किया। तुलजापुर के मन्दिरों को नष्ट करता हुआ वह सतारा के ३० किलोमीटर उत्तर वाई, शिरवल के नजदीक तक आ गया। पर शिवाजी प्रतापगढ़ के दुर्ग पर ही रहे। अफजल खां ने अपने दूत कृष्णजी भास्कर को सन्धि-वार्ता के लिए भेजा। उसने उसके मार्फत ये सन्देश भिजवाया कि अगर शिवाजी बीजापुर की अधीनता स्वीकार कर ले तो सुल्तान उसे उन सभी क्षेत्रों का अधिकार दे देंगे जो शिवाजी के नियन्त्रण में हैं। साथ ही शिवाजी को बीजापुर के दरबार में एक सम्मानित पद प्राप्त होगा। हालांकि शिवाजी के मंत्री और सलाहकार अस सन्धि के पक्ष में थे पर शिवाजी को ये वार्ता रास नहीं आई। उन्होंने कृष्णजी भास्कर को उचित सम्मान देकर अपने दरबार में रख लिया और अपने दूत गोपीनाथ को वस्तुस्थिति का जायजा लेने अफजल खां के पास भेजा। गोपीनाथ और कृष्णजी भास्कर से शिवाजी को ऐसा लगा कि सन्धि का षडयन्त्र रचकर अफजल खां शिवाजी को बन्दी बनाना चाहता है। अतः उन्होंने युद्ध के बदले अफजल खां को एक बहुमूल्य उपहार भेजा और इस तरह अफजल खां को सन्धि वार्ता के लिए राजी किया। सन्धि स्थल पर दोनों ने अपने सैनिक घात लगाकर रखे थे मिलने के स्थान पर जब दोनों मिले तब अफजल खां ने अपने कट्यार से शिवाजी पे वार किया बचाव में शिवाजी ने अफजल खां को अपने वस्त्रों वाघनखो से मार दिया (१० नवम्बर १६५९)।

अफजल खां की मृत्यु के बाद शिवाजी ने पन्हाला के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इसके बाद पवनगढ़ और वसंतगढ़ के दुर्गों पर अधिकार करने के साथ ही साथ उन्होंने रूस्तम खां के आक्रमण को विफल भी किया। इससे राजापुर तथा दावुल पर भी उनका कब्जा हो गया। अब बीजापुर में आतंक का माहौल पैदा हो गया और वहां के सामन्तों ने आपसी मतभेद भुलाकर शिवाजी पर आक्रमण करने का निश्चय किया। २ अक्टूबर १६६५ को बीजापुरी सेना ने पन्हाला दुर्ग पर अधिकार कर लिया। शिवाजी संकट में फंस चुके थे पर रात्रि के अंधकार का लाभ उठाकर वे भागने में सफल रहे। बीजापुर के सुल्तान ने स्वयं कमान सम्हालकर पन्हाला, पवनगढ़ पर अपना अधिकार वापस ले लिया, राजापुर को लूट लिया और श्रृंगारगढ़ के प्रधान को मार डाला। इसी समय कर्नाटक में सिद्दीजौहर के विद्रोह के कारण बीजापुर के सुल्तान ने शिवाजी के साथ समझौता कर लिया। इस सन्धि में शिवाजी के पिता शाहजी ने मध्यस्थता का काम किया। सन् १६६२ में हुई इस सन्धि के अनुसार शिवाजी को बीजापुर के सुल्तान द्वारा स्वतंत्र शासक की मान्यता मिली। इसी सन्धि के अनुसार उत्तर में कल्याण से लेकर दक्षिण में पोण्डा तक (२५० किलोमीटर) का और पूर्व में इन्दापुर से लेकर पश्चिम में दावुल तक (१५० किलोमीटर) का भूभाग शिवाजी के नियन्त्रण में आ गया। शिवाजी की सेना में इस समय तक ३०००० पैदल और १००० घुड़सवार हो गए थे।

मुगलों से संघर्ष

उत्तर भारत में बादशाह बनने की होड़ खत्म होने के बाद औरंगजेब का ध्यान दक्षिण की तरफ गया। वो शिवाजी की बढ़ती प्रभुता से परिचित था और उसने शिवाजी पर नियन्त्रण रखने के उद्देश्य से अपने मामा शाइस्ता खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। शाइस्का खाँ अपने १,५०,००० फ़ौज लेकर सूपन और चाकन के दुर्ग पर अधिकार कर पूना पहुंच गया। उसने ३ साल तक मावल में लुटमार कि। एक रात शिवाजी ने अपने ३५० मवलो के साथ उन पर हमला कर दिया। शाइस्ता तो खिड़की के रास्ते बच निकलने में कामयाब रहा पर उसे इसी क्रम में अपनी चार अंगुलियों से हाथ धोना पड़ा। शाइस्ता खाँ के पुत्र अबुल फतह तथा चालीस रक्षकों और अनगिनत सैनिकों का कत्ल कर दिया गया। यहां पर मराठों ने अंधेरे मे स्त्री पुरूष के बीच भेद न कर पाने के कारण खान के जनान खाने की बहुत सी औरतों को मार डाला था। इस घटना के बाद औरंगजेब ने शाइस्ता को दक्कन के बदले बंगाल का सूबेदार बना दिया और शाहजादा मुअज्जम शाइस्ता की जगह लेने भेजा गया।

सूरत में लूट

इस जीत से शिवाजी की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। ६ साल शाईस्ता खान ने अपनी १,५०,००० फ़ौज लेकर राजा शिवाजी का पुरा मुलुख जलाकर तबाह कर दिया था। इस लिए उस् का हर्जाना वसूल करने के लिए शिवाजी ने मुगल क्षेत्रों में लूटपाट मचाना आरम्भ किया। सूरत उस समय पश्चिमी व्यापारियों का गढ़ था और हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिए हज पर जाने का द्वार। यह एक समृद्ध नगर था और इसका बंदरगाह बहुत महत्वपूर्ण था। शिवाजी ने चार हजार की सेना के साथ १६६४ में छः दिनों तक सूरत के धनाड्य व्यापारियों को लूटा। आम

आदमी को उन्होनें नहीं लूटा और फिर लौट गए। इस घटना का ज़िक्र डच तथा अंग्रेजों ने अपने लेखों में किया है। उस समय तक यूरोपीय व्यापारियों ने भारत तथा अन्य एशियाई देशों में बस गये थे। नादिर शाह के भारत पर आक्रमण करने तक (१७३९) किसी भी य़ूरोपीय शक्ति ने भारतीय मुगल साम्राज्य पर आक्रमण करने की नहीं सोची थी।[*उद्धरण चाहिए*]

सूरत में शिवाजी की लूट से खिन्न होकर औरंगजेब ने इनायत खाँ के स्थान पर गयासुद्दीन खां को सूरत का फौजदार नियुक्त किया। और शहजादा मुअज्जम तथा उपसेनापति राजा जसवंत सिंह की जगह दिलेर खाँ और राजा जयसिंह की नियुक्ति की गई। राजा जयसिंह ने बीजापुर के सुल्तान, यूरोपीय शक्तियाँ तथा छोटे सामन्तों का सहयोग लेकर शिवाजी पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में शिवाजी को हानि होने लगी और हार की सम्भावना को देखते हुए शिवाजी ने सन्धि का प्रस्ताव भेजा। जून १६६५ में हुई इस सन्धि के मुताबिक शिवाजी २३ दुर्ग मुग़लों को दे देंगे और इस तरह उनके पास केवल १२ दुर्ग बच जाएँगे। इन २३ दुर्गों से होने वाली आमदनी ४ लाख हूण सालाना थी। बालाघाट और कोंकण के क्षेत्र शिवाजी को मिलेंगे पर उन्हें इसके बदले में १३ किस्तों में ४० लाख हूण अदा करने होंगे। इसके अलावा प्रतिवर्ष ५ लाख हूण का राजस्व भी वे देंगे। शिवाजी स्वयं औरंगजेब के दरबार में होने से मुक्त रहेंगे पर उनके पुत्र शम्भाजी को मुगल दरबार में खिदमत करनी होगी। बीजापुर के ख़िलाफ़ शिवाजी मुगलों का साथ देंगे।

शिवाजी द्वारा अफजल खान का वध ; २०वीं शताब्दी के आरम्भिक काल में सालाराम हलदन्कर द्वारा चित्रित)

आगरा में आमंत्रण और पलायन

शिवाजी को आगरा बुलाया गया जहाँ उन्हें लगा कि उन्हें उचित सम्मान नहीं मिल रहा है। इसके विरोध में उन्होंने अपना रोश भरे दरबार में दिखाया और औरंगजेब पर विश्वासघात का आरोप लगाया। औरंगजेब इससे क्षुब्ध हुआ और उसने शिवाजी को नजरबन्द कर दिया और उनपर ५००० सैनिकों के पहरे लगा दिये। कुछ ही दिनों बाद (१८ अगस्त १६६६ को) राजा शिवाजी को मार डालने का इरादा औरंगजेब का था। लेकिन अपने अदम्य साहस ओर युक्ति के साथ शिवाजी और सम्भाजी दोनों इससे भागने में सफल रहे[१७ आगस्त १६६६। सम्भाजी को मथुरा में एक विश्वासी ब्राह्मण के यहाँ छोड़ शिवाजी महाराज बनारस, गये, पुरी होते हुए सकुशल राजगढ़ पहुँच गए [२ सितम्बर १६६६]। इससे मराठों को नवजीवन सा मिल गया। औरंगजेब ने जयसिंह पर शक करके उसकी हत्या विष देकर करवा डाली। जसवंत सिंह के द्वारा पहल करने के बाद सन् १६६८ में शिवाजी ने मुगलों के साथ दूसरी बार सन्धि की। औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की मान्यता दी। शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को ५००० की मनसबदारी मिली और शिवाजी को पूना, चाकन और सूपा का जिला लौटा दिया गया। पर, सिंहगढ़ और पुरन्दर पर मुग़लों का अधिपत्य बना रहा। सन् १६७० में सूरत नगर को दूसरी बार शिवाजी ने लूटा। नगर से १३२ लाख की सम्पत्ति शिवाजी के हाथ लगी और लौटते वक्त उन्होंने मुगल सेना को सूरत के पास फिर से हराया।[*उद्धरण चाहिए*]

राज्याभिषेक

सन् १६७४ तक शिवाजी ने उन सारे प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था जो पुरन्दर की सन्धि के अन्तर्गत उन्हें मुग़लों को देने पड़े थे। पश्चिमी महाराष्ट्र में स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के बाद शिवाजी ने अपना राज्याभिषेक करना चाहा, परन्तु महाराष्ट्र के ब्राह्मणों ने शिवाजी का राज्याभिषेक करने से यह कह कर मना किया की वे क्षत्रिय जाती से नहीं हैं I शिवाजी के निजी सचिव बालाजी जी ने काशी से गागाभट्ट नामक पंडित को बुलाकर उनका राज्याभिषेक कारवाया। विभिन्न राज्यों के दूतों, प्रतिनिधियों के अलावा विदेशी व्यापारियों को भी इस समारोह में आमंत्रित किया गया। पर उनके राज्याभिषेक के १२ दिन बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया था इस कारण से ४ अक्टूबर १६७४ को दूसरी बार शिवाजी ने छत्रपति की उपाधि ग्रहण की। दो बार हुए इस समारोह में लगभग ५० लाख रुपये खर्च हुए। इस समारोह में हिन्दवी स्वराज की स्थापना का उद्घोष किया गया था। विजयनगर के पतन के बाद दक्षिण में यह पहला हिन्दू साम्राज्य था। एक स्वतंत्र शासक की तरह उन्होंने अपने नाम का सिक्का चलवाया। इसके बाद बीजापुर के सुल्तान ने कोंकण विजय के लिए अपने दो सेनाधीशों को शिवाजी के विरुद्ध भेजा पर वे असफल रहे।[*उद्धरण चाहिए*]

हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का दिवस है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस दिवस को 'हिंदू साम्राज्य दिवसोत्सव' के रूप में मनाता है जो इनके वर्ष भर में मनाये जाने वाले छः उत्सवों में से एक है।

दक्षिण में विजय

सन् १६७७-७८ में शिवाजी का ध्यान कर्नाटक की ओर गया। बम्बई के दक्षिण में कोंकण, तुंगभद्रा नदी के पश्चिम में बेळगांव तथा धारवाड़ का क्षेत्र, मैसूर, वैलारी, त्रिचूर तथा जिंजी पर अधिकार करने के बाद ३ अप्रैल, १६८० को शिवाजी का देहान्त हो गया।

मृत्यु और उत्तराधिकार

विष दिलाने के बाद शिवाजी महाराज की मृत्यु ३ अप्रैल १६८० में हुई। उस समय शिवाजी के उत्तराधिकार संभाजी को मिले। शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र संभाजी थे और दूसरी पत्नी से राजाराम नाम एक दूसरा पुत्र था। उस समय राजाराम की उम्र मात्र १० वर्ष थी अतः मराठों ने शम्भाजी को राजा मान लिया। उस समय औरंगजेब राजा शिवाजी का देहान्त देखकर अपनी पूरे भारत पर राज्य करने कि अभिलाषा से अपनी ५,००,००० सेना सागर लेकर दक्षिण भारत जीतने निकला। औरंगजेब ने दक्षिण में आते ही अदिल्शाही २ दिनो में और कुतुबशाही १ ही दिनो में खतम कर दी। पर राजा सम्भाजी के नेतृत्व में मराठाओ ने ९ साल युद्ध करते हुये अपनी स्वतन्त्रता बरकरार रखी। औरंगजेब के पुत्र शहजादा अकबर ने औरंगजेब के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया। संभाजी ने उसको अपने यहाँ शरण दी। औरंगजेब ने अब फिर जोरदार तरीके से संभाजी के ख़िलाफ़ आक्रमण करना शुरु किया। उसने अन्ततः १६८९ में संभाजी के बीवी के सगे भाई याने गणोजी शिर्के की मुखबरी से संभाजी को मुकरव खाँ द्वारा बन्दी बना लिया। औरंगजेब ने राजा संभाजी से बदसलूकी की और बुरा हाल कर के मार दिया। अपनी राजा कि औरंगजेब द्वारा की गई बदसलूकी और नृशंसता द्वारा मारा हुआ देखकर पूरा मराठा स्वराज्य क्रोधित हुआ। उन्होने अपनी पुरी ताकत से राजाराम के नेतृत्व में मुगलों से संघर्ष जारी रखा। १७०० इस्वी में राजाराम की मृत्यु हो गई। उसके बाद राजाराम की पत्नी ताराबाई ४ वर्षीय पुत्र शिवाजी द्वितीय की संरक्षिका बनकर राज करती रही। आखिरकार २५ साल मराठा स्वराज्य के युद्ध लड के थके हुये औरंगजेब की उसी छत्रपति शिवाजी के स्वराज्य में दफन हुये।

शासन और व्यक्तित्व

शिवाजी को एक कुशल और प्रबुद्ध सम्राट के रूप में जाना जाता है। यद्यपि उनको अपने बचपन में पारम्परिक शिक्षा कुछ खास नहीं मिली थी, पर वे भारतीय इतिहास और राजनीति से सुपरिचित थे। उन्होंने शुक्राचार्य तथा कौटिल्य को आदर्श मानकर कूटनीति का सहारा लेना कई बार उचित समझा था। अपने समकालीन मुगलों की तरह वह भी निरंकुश शासक थे, अर्थात शासन की समूची बागडोर राजा के हाथ में ही थी। पर उनके प्रशासकीय कार्यों में मदद के लिए आठ मंत्रियों की एक परिषद थी जिन्हें अष्टप्रधान कहा जाता था। इसमें मंत्रियों के प्रधान को पेशवा कहते थे जो राजा के बाद सबसे प्रमुख हस्ती था। अमात्य वित्त और राजस्व के कार्यों को देखता था तो मंत्री राजा की व्यक्तिगत दैनन्दिनी का खयाल रखाता था। सचिव दफ़तरी काम करते थे जिसमे शाही मुहर लगाना और सन्धि पत्रों का आलेख तैयार करना शामिल होते थे। सुमन्त विदेश मंत्री था। सेना के प्रधान को सेनापति कहते थे। दान और धार्मिक मामलों के प्रमुख को पण्डितराव कहते थे। न्यायाधीश न्यायिक मामलों का प्रधान था।

मराठा साम्राज्य तीन या चार विभागों में विभक्त था। प्रत्येक प्रान्त में एक सूबेदार था जिसे प्रान्तपति कहा जाता था। हरेक सूबेदार के पास भी एक अष्टप्रधान समिति होती थी। कुछ प्रान्त केवल करदाता थे और प्रशासन के मामले में स्वतंत्र। न्यायव्यवस्था प्राचीन पद्धति पर आधारित थी। शुक्राचार्य, कौटिल्य और हिन्दू धर्मशास्त्रों को आधार मानकर निर्णय दिया जाता था। गांव के पटेल फौजदारी मुकदमों की जांच करते थे। राज्य की आय का साधन भूमि से प्राप्त होने वाला कर था पर चौथ और सरदेशमुखी से भी राजस्व वसूला जाता था। 'चौथ' पड़ोसी राज्यों की सुरक्षा की गारंटी के लिए वसूले जाने वाला कर था। शिवाजी अपने को मराठों का *सरदेशमुख* कहते थे और इसी हैसियत से सरदेशमुखी कर वसूला जाता था।

राजमुद्रा

शिवाजी की राजमुद्रा संस्कृत में लिखी हुई एक अष्टकोणीय मुहर (seal) थी जिसका उपयोग वे अपने पत्रों एवं सैन्यसामग्री पर करते थे। उनके हजारों पत्र प्राप्त हैं जिन पर राजमुद्रा लगी हुई है। माना जाता है कि शिवाजी के पिता शाहजीराजे भोसले ने यह राजमुद्रा उन्हें तब प्रदान की थी जब शाहजी ने जीजाबाई और तरुण शिवाजी को पुणे की जागीर संभालने के लिए भेजा था। जिस सबसे पुराने पत्र पर यह राजमुद्रा लगी है वह सन १६३९ का है। मुद्रा पर लिखा वाक्य निम्नलिखित है-

शिवाजी की राजमुद्रा

प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता शाहसुनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते।

(अर्थ : जिस प्रकार बाल चन्द्रमा प्रतिपद (धीरे-धीरे) बढ़ता जाता है और सारे विश्व द्वारा वन्दनीय होता है, उसी प्रकार शाहजी के पुत्र शिव की यह मुद्रा भी बढ़ती जाएगी।)

धार्मिक नीति

शिवाजी एक धर्मपरायण हिन्दु शासक थे तथा वह धार्मिक सहिष्णु भी थे। उनके साम्राज्य में मुसलमानों को धार्मिक स्वतंत्रता थी। कई मस्जिदों के निर्माण के लिए शिवाजी ने अनुदान दिया। हिन्दू पण्डितों की तरह मुसलमान सन्तों और फ़कीरों को भी सम्मान प्राप्त था। उनकी सेना में मुसलमान सैनिक भी थे। शिवाजी हिन्दू संस्कृति को बढ़ावा देते थे। पारम्परिक हिन्दू मूल्यों तथा शिक्षा पर बल दिया जाता था। अपने अभियानों का आरम्भ वे प्रायः दशहरा के अवसर पर करते थे।

चरित्र

शिवाजी महाराज को अपने पिता से स्वराज की शिक्षा ही मिली जब बीजापुर के सुल्तान ने शाहजी राजे को बन्दी बना लिया तो एक आदर्श पुत्र की तरह उन्होंने बीजापुर के शाह से सन्धि कर शाहजी राजे को छुड़वा लिया। इससे उनके चरित्र में एक उदार अवयव नज़र आता है। उसेक बाद उन्होंने पिता की हत्या नहीं करवाई जैसा कि अन्य सम्राट किया करते थे। शाहजी राजे के मरने के बाद ही उन्होंने अपना राज्याभिषेक करवाया हालांकि वो उस समय तक अपने पिता से स्वतंत्र होकर एक बड़े साम्राज्य के अधिपति हो गये थे। उनके नेतृत्व को सब लोग स्वीकार करते थे यही कारण है कि उनके शासनकाल में कोई आन्तरिक विद्रोह जैसी प्रमुख घटना नहीं हुई थी।

वह एक अच्छे सेनानायक के साथ एक अच्छे कूटनीतिज्ञ भी थे। कई जगहों पर उन्होंने सीधे युद्ध लड़ने की बजाय कूटनीति से काम लिया था। लेकिन यही उनकी कूटनीति थी, जो हर बार बड़े से बड़े शत्रु को मात देने में उनका साथ देती रही।

शिवाजी महाराज की "गनिमी कावा" नामक कूटनीति, जिसमें शत्रु पर अचानक आक्रमण करके उसे हराया जाता है, विलोभनियता से और आदरसहित याद किया जाता है।

शिवाजी महाराज के गौरव में ये पंक्तियां प्रसिद्ध हैं-

शिवरायांचे आठवावे स्वरुप। शिवरायांचा आठवावा साक्षेप।
शिवरायांचा आठवावा प्रताप। भूमंडळी ॥

प्रमुख तिथियां और घटनाएं

- **१९ फरवरी १६३०** : शिवाजी महाराज का जन्म।
- **१४ मई १६४०** : शिवाजी महाराज और साईबाई का विवाह

- **१६४२**: शिवाजी और सोयाराबाई का विवाह
- **१६४६** : शिवाजी महाराज ने पुणे के पास तोरण दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- **१६५६** : शिवाजी महाराज ने चन्द्रराव मोरे से जावली जीता।
- **१० नवंबर, १६५९** : शिवाजी महाराज ने अफजल खान का वध किया।
- **५ सितंबर, १६५९** : संभाजी का जन्म।
- **१६५९** : शिवाजी महाराज ने बीजापुर पर अधिकार कर लिया।
- **६ से १० जनवरी, १६६४** : शिवाजी महाराज ने सूरत पर धावा बोला और बहुत सारी धन-सम्पत्ति प्राप्त की।
- **१६६५** : शिवाजी महाराज ने औरंगजेब के साथ पुरन्धर शांति सन्धि पर हस्ताक्षर किया।
- **१६६६** : शिवाजी महाराज आगरा कारावास से भाग निकले।
- **१६६७** : औरंगजेब राजा शिवाजी महाराज के शीर्षक अनुदान। उन्होंने कहा कि कर लगाने का अधिकार प्राप्त है।
- **१६६८** : शिवाजी महाराज और औरंगजेब के बीच शांति सन्धि
- **१६७०** : शिवाजी महाराज ने दूसरी बार सूरत पर धावा बोला।
- **१६७०**: राजाराम का जन्म
- **१६७४** : शिवाजी महाराज ने रायगढ़ में 'छत्रपति'की पदवी मिली और राज्याभिषेक करवाया। १८ जून को जीजाबाई की मृत्यु।
- **३ अप्रैल १६८०** : शिवाजी महाराज की मृत्यु।

इन्हें भी देखें

- मराठा साम्राज्य
- अष्टप्रधान

सन्दर्भ

1. गुप्ता, डॉ संगीता. *स्वराज्य के सूर्य शिवाजी* (https://books.google.co.in/books?id=M6g0EQAAQBAJ&pg=PA49&dq=%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A5%80+%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%AF+%E0%A4%95%E0%A5%80+%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%82%E0%A4%B5+%E0%A4%B0%E0%A4%96%E0%A5%80&hl=en&newbks=1&newbks_redir=0&source=gb_mobile_search&ovdme=1&sa=X&ved=2ahUKEwjBm-T8u9GLAxVu3TgGHaqwIxsQ6AF6BAgIEAM#v=onepage&q=%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A5%80%20%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%AF%20%E0%A4%95%E0%A5%80%20%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%82%E0%A4%B5%20%E0%A4%B0%E0%A4%96%E0%A5%80&f=false). JEC PUBLICATION. p. 49. ISBN 978-93-6175-774-7. "शिवाजी के निधन के बाद "स्वराज्य" नाम का व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा, और "हिंदवी" के स्थान पर "मराठा" रख दिया गया।"
2. "Chhatrapati Shivaji Maharaj Jayanti: मराठा गौरव छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती के लिए स्पीच" (https://www.jagran.com/lifestyle/miscellaneous-shivaji-maharaj-jayanti-history-speeches-20044173.html). *Dainik Jagran*. अभिगमन तिथि: 2021-05-10.
3. https://www.abplive.com/states/maharashtra/chhatrapati-shivaji-maharaj-jayanti-2022-started-gorilla-war-trend-2064914 }}

बाहरी कड़ियाँ

- छत्रपति शिवाजी भारतवर्ष (टीवी सीरीज) (https://www.youtube.com/watch?v=zxokFpgxh9U)
- शिवाजी की नौसैनिक परम्परा (https://web.archive.org/web/20100219220231/http://hindi.webduniya.com/miscellaneous/kidsworld/prompterpersonality/0802/19/1080219017_1.htm)
- वीर शिवाजी का हिंदू साम्राज्य (https://www.bhaukalnews.in/shivaji-jayanti-creator-of-the-first-hindu-empire/)
- श्री.अनिल सुर्यकांत दाभोळकर इतिहास के अभ्यासक..

मराठा साम्राज्य का इतिहास [छुपाएँ]

राज्यकर्ता	छत्रपति शिवाजी · संभाजी · राजाराम · ताराबाई · शाहु
पेशवा	मोरोपंत पिंगले · बालाजी विश्वनाथ · बाजीराव प्रथम · नानासाहेब · माधवराव · नारायणराव · रघुनाथराव · सवाई माधवराव · बाजीराव द्वितीय · नाना साहब
अष्टप्रधानमंडळ	शिवकालीन अष्टप्रधानमंडळ · रामचंद्रपंत अमात्य · राम शास्त्री
प्रमुख स्त्रियाँ	जिजाबाई · सईबाई · सोयराबाई · येसूबाई · ताराबाई · अहिल्याबाई होल्कर · राधाबाई · काशीबाई · मस्तानी
सेनापति	माणकोजी दहातोंडे · नेताजी पालकर · हंबीरराव मोहिते · प्रतापराव गुजर · संताजी घोड़पड़े · धनाजी जाधव · चंद्रसेन जाधव · कान्होजी आंग्रे
प्रमुख सरदार/सूबेदार	दादाजी कोंडदेव · तानाजी मालुसरे · बाजी पासलकर · बाजीप्रभु देशपाण्डे · मल्हारराव होलकर · महादजी शिंदे
प्रमुख वीर/दुर्गपति	मुरारबाजी देशपांडे · मानाजी पायगुडे · मायनाक भंडारी · बाजी पासलकर · जिवा महाला
प्रमुख अभियान	सूरत की पहली लूट
युद्ध	प्रतापगढ़ का युद्ध · कोल्हापुर की लड़ाई · पावनखिंड की लड़ाई · उंबरखिंड की लड़ाई · सिंहगढ़ का युद्ध · साल्हेर की लड़ाई · पोंडा की घेराबंदी · आष्टी की लढाई · बुंदेलखंड की लड़ाई · पालखेड़ की लड़ाई · दिल्ली की लड़ाई (१७३७) · तिरुचिरापल्ली की घेराबंदी (१७४१) · लाहौर की लड़ाई (१७५९) · उदगीर की लड़ाई · अटक का युद्ध १७५८ · पेशावर की लड़ाई १७५८ · पानीपत का तृतीय युद्ध · राक्षसभुवन की लड़ाई · वडगाँव की लड़ाई · वसई का युद्ध · खर्ड्या की लढाई · हडपसर की लड़ाई · गजेंद्रगढ़ की लड़ाई · खर्दा की लड़ाई · प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध · द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध · तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध · मराठा-दुर्राणी युद्ध
प्रमुख संधियाँ	पुरंदर की संधि · सालबाई की संधि · वसई की संधि
शत्रुपक्ष	बीजापुर सल्तनत · मुगल साम्राज्य · दुर्रानी साम्राज्य · ब्रिटिश साम्राज्य · पुर्तगाली साम्राज्य · हैदराबाद की निज़ामशाही · मैसूर राज्य
शत्रु	औरंगजेब · मिर्जा राजा जयसिंह · अफजल खान · शाइस्ता खान · सिद्दी जौहर · खवासखान
प्रमुख दुर्ग	रायरेश्वर · पन्हाळा · अजिंक्यतारा · तोरण · पुरंदर दुर्ग · प्रतापगढ़ · राजगढ़ · लोहगढ़ · विजयदुर्ग · विशालगढ़ · शिवनेरी · सज्जनगढ़ · सिंहगढ़ · हरिश्चंद्रगढ़ · रायगढ़ · साल्हेर
अन्य	शिवराज्याभिषेक · मराठे गारदी · हुजूर दफ्तर · जेम्स वेल्स (चित्रकार) · तंजावर का मराठा राज्य · कालरेषा

"https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=शिवाजी&oldid=6523332" से प्राप्त